Result Mitra

रिजल्ट मित्र स्पेशल

Hand Written

करंट अफेयर्स नोट्स

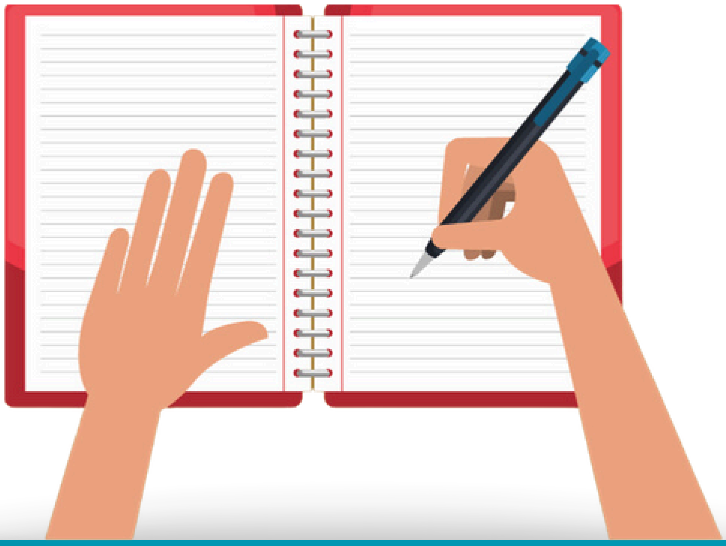

वीर बाल दिवस और प्रधानमंत्री बाल पुरस्कार

26/Dec/24

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू वीर बाल दिवस पर 14 राज्यों/केन्द्र शासित प्रदेशों के 17 बच्चों को प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार प्रदान करेंगी।

वीर बाल दिवस और प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार भारतीय बच्चों की उपलब्धियों और प्रतिभा को उजागर करने के लिए मनाया जा रहा है।

महिला एवं बाल विकास मंत्रालय द्वारा 26 दिसंबर 2024 को वीर बाल दिवस मनाया गया।

यह नई दिल्ली के भारत मंडपम में आयोजित किया गया।

इस अवसर पर प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार प्रदान किये जाएंगे।

इस बार 14 राज्यों केन्द्र शासित प्रदेशों के 17 बच्चों को इस पुरस्कार के लिए चुना गया है।

इनमें 7 लड़के और 10 लड़कियाँ शामिल हैं।

वीर बाल दिवस क्यों ?

वीर बाल दिवस गुरु गोविंद सिंह जी के साहिबजादे जोरावर सिंह जी और फतेह सिंह जी के बलिदान को याद करने के लिए मनाया जाता है।

इन दोनों साहिबजादों ने मुगल शासक औरंगजेब के अत्याचारों का सामना करते हुए धर्म के लिए अपने प्राणों का त्याग कर दिया था।

26 दिसंबर ही क्यों?

26 दिसंबर 1704 को ही इन दो साहिबजादों को दीवार में चिनवा दिया गया था। इसलिए इस दिन को वीर बाल दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया।

प्रधानमंत्री बाल पुरस्कार

प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार भारत सरकार द्वारा बच्चों को उनके विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट योगदान के लिए दिया जाने वाला एक प्रतिष्ठित पुरस्कार है।

प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार को भारत सरकार असाधारण उपलब्धियों के लिए 7 श्रेणियों में प्रदान करती है।

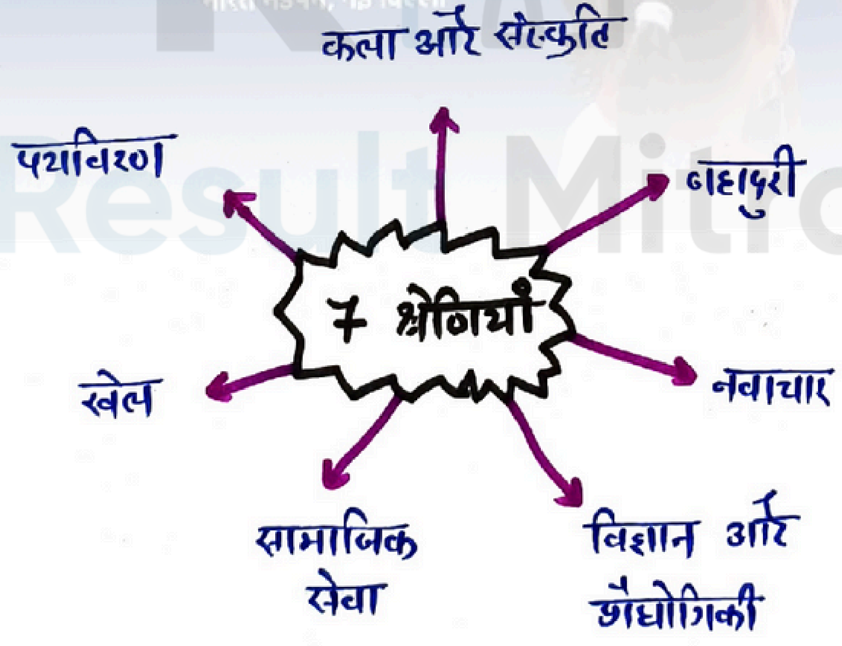

प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार:

प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार (PMRBP) भारत सरकार द्वारा 5 से 18 वर्ष की आयु के बच्चों को उनकी असाधारण उपलब्धियों के लिए प्रदान किया जाता है।

प्रत्येक विजेता को एक पदक, प्रमाण पत्र और प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जाता है।

महत्व:

वीर बाल दिवस और प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार दोनों का उद्देश्य बच्चों में नैतिक मूल्यों, साहस, नवाचार और समाज सेवा की भावना को बढ़ावा देना है। ये पहलें देश के भविष्य निर्माताओं को प्रेरित करती हैं और उन्हें अपने कौशल और प्रतिभा को विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करती हैं।

देश का पहला डिजिटल म्यूजियम

भारत का पहला म्यूजियम (डिजिटल) दुनियाभर के दर्शकों के लिए खुल गया है।

इसका नाम अभय प्रभावना है

यह महाराष्ट्र में इंद्रायणी नदी के किनारे स्थित है।

इसे फिरोदिया इंस्टीट्यूट ऑफ फिलॉसफी कल्चर एंड हिस्ट्री ने बनाया है

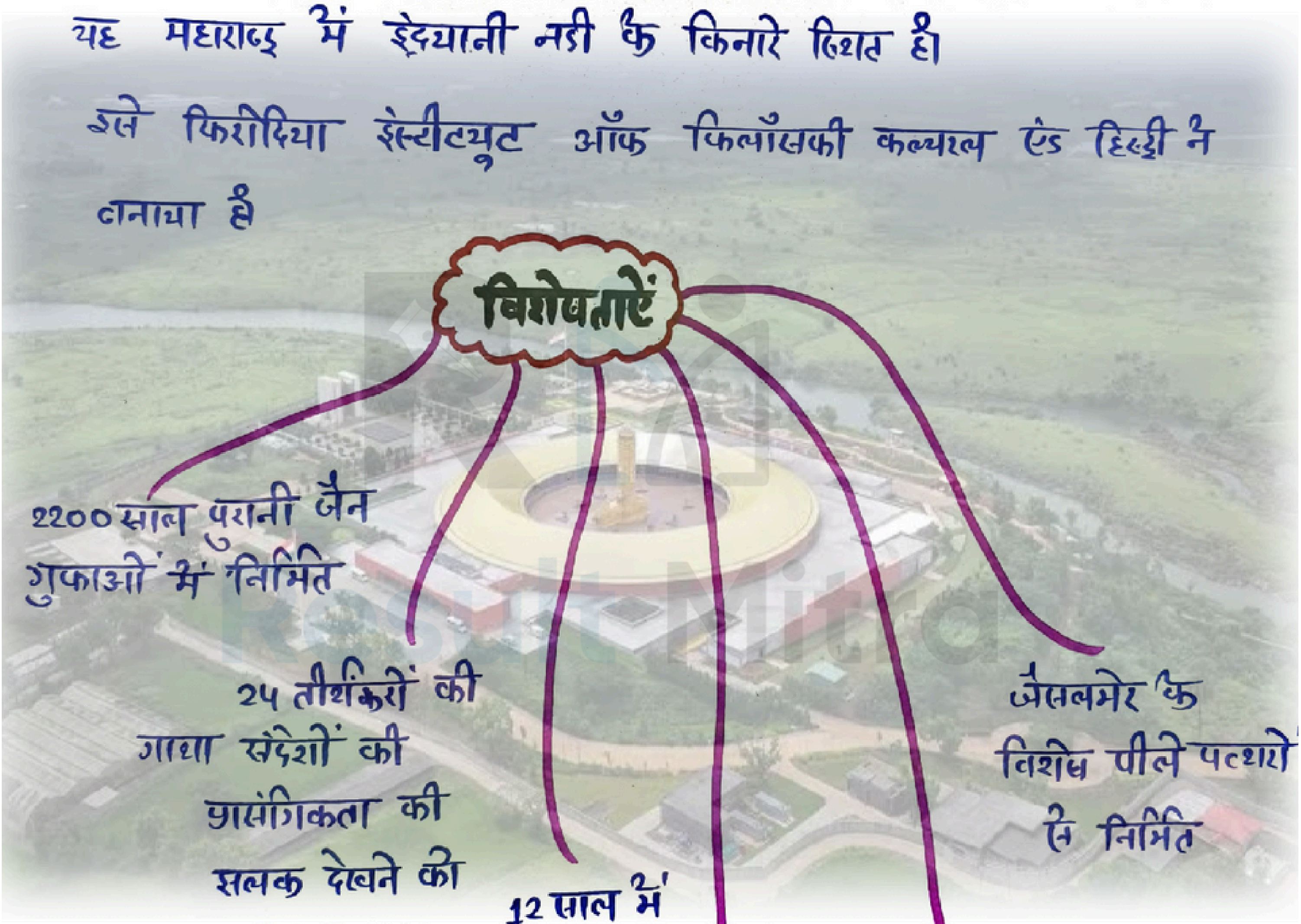

विशेषताएं

- 2200 साल पुरानी जैन गुफाओं में निर्मित
- 25 तीर्थंकरों की गाथा संदेशों की प्रासंगिकता की झलक देखने को मिलेगी।
- 12 साल में तैयार
- 400 करोड़ रुपये से ज्यादा लागत
- 100 फीट का मान स्तंभ
- जैसलमेर के विशेष पीले पत्थरों से निर्मित

@resultmitra www.resultmitra.com

उद्देश्य

- आम जनता को जैन विचार, विश्वास और इतिहास तक आसान पहुंच प्रदान करना।
- जैन धर्म की विरासत सौंदर्य को शैक्षिक मूल्य को प्रदर्शित करके जैन परिवारों में गर्व की भावना पैदा करना।
- मानववाद, कानून और राजनीति, व्यापार और वाणिज्य आदि के विविध क्षेत्रों में योगदान को दर्शाना।
- जैन इतिहासों का दस्तावेजीकरण करना।

Result Mitra

देश का पहला डिजिटल म्युजियम

डिजिटल अनुभव:

संग्रहालय में अत्याधुनिक डिजिटल तकनीकों का उपयोग किया गया है, जैसे:

3D होलोग्राफिक प्रोजेक्शन: तीर्थंकरों के जीवन की झलक।

वर्चुअल रियलिटी (VR): आगंतुकों को प्राचीन जैन गुफाओं और मंदिरों की सैर कराना।

इंटरएक्टिव डिस्प्ले: दर्शकों को डिजिटल स्क्रीन के माध्यम से जैन धर्म की शिक्षाओं को समझने का मौका।

@resultmitra www.resultmitra.com

पैंगोलिन की अवैध तस्करी

हाल की घटनाओं ने पैंगोलिन तस्करी पर चिंता बढ़ाई है। जो कि IUCN की रेड लिस्ट में संकटग्रस्त से गंभीर संकटग्रस्त तक श्रेणीबद्ध है।

- पैंगोलिन के माँस और स्केल की अंतर्राष्ट्रीय बाजार में भारी माँग है।

- 2018-2022 के आँकड़े बताते हैं कि भारत में 1203 पैंगोलिन अवैध रूप से शिकार और तस्करी किये गये।

- पैंगोलिन जानवर खतरे में पड़ने पर खुद को गोल कर लेता है। जिससे शिकारियों को इसे पकड़ने में आसानी हो जाती है।
- इसके स्केल्स का उपयोग लग्जरी फैशन और माँस को व्यंजनों में किया जाता है।

- पारंपरिक चीनी चिकित्सा में इसकी माँग बहुत अधिक है।

तस्करी में तीन स्तर शामिल होते हैं

- जंगल में जानवरों को पकड़ने वाले
- मध्यस्थ जो तस्करी करते हैं
- अंतिम खरीदार

पैंगोलिन क्या है?

पैंगोलिन जिन्हें स्केली ऐंटईटर भी कहा जाता है। एकमात्र ज्ञात स्तनधारी है। जिसकी त्वचा पर बड़े केराटिन स्केल होते हैं।

- विश्व में इनकी कुल आठ प्रजातियां पायी जाती है। (चार एशिया में चार अफ्रीका में)
- भारत में दो प्रजातियाँ पायी जाती है।
  - भारतीय पैंगोलिन
  - चीनी पैंगोलिन
- यह विश्व के सबसे अधिक तस्करी किये जाने वाले स्तनधारियों में से एक है। जबकि इसके व्यापार पर अंतर्राष्ट्रीय प्रतिबंध हैं।

पैंगोलिन, जिसे हिंदी में "सेलन" या "शल्कीय चींटीखोर" कहा जाता है, एक विलक्षण स्तनधारी है जो अपनी शरीर को ढकने वाले कठोर और overlapping शल्कों (scales) के लिए जाना जाता है। यह प्रजाति मुख्य रूप से एशिया और अफ्रीका के उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में पाई जाती है।

वर्गीकरण:

वैज्ञानिक नाम: Manis spp. (एशियाई प्रजातियां), Phataginus spp. (अफ्रीकी प्रजातियां) ।

CITES (Convention on International Trade in Endangered Species): सभी प्रजातियां सूची-1 में शामिल, यानी इनका व्यापार पूरी तरह प्रतिबंधित है।

पैंगोलिन के लिए खतरे:

1. अवैध शिकार और व्यापार:
2. वनों की कटाई:
3. ग्रामीण क्षेत्रों में इसे भोजन के रूप में भी शिकार किया जाता है।

भारत में, यह वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972 के तहत अनुसूची I में शामिल है।

यह दुनिया का सबसे ज्यादा अवैध रूप से तस्करी किया जाने वाला स्तनधारी है।

ब्रु जनजाति

ब्रु जनजाति जिन्हें रींग भी कहा जाता है। 1997 और 2009 में मिजोरम में हुए जातीय हिंसा के कारण त्रिपुरा में बसाए गए। उनके पुनर्वास के लिए केन्द्र और राज्य सरकार ने व्यापक विकास और सहायता योजना चलाई है।

मिजोरम के ममित, लुंगलेई और कोलासिब जिलों में ब्रु (रींग) आदिवासी हिंसा के कारण 1997, 1998 और 2009 में त्रिपुरा के कई जिलों में पुनर्वासित हुए।

16 जनवरी 2020 को भारत सरकार, त्रिपुरा, मिजोरम और ब्रु संगठनों की बीच एक चार पक्षीय समझौता हुआ।

कुल 754 एकड़ भूमि 6935 परिवारों के पुनर्वास के लिए प्रदान की गई।

केन्द्र सरकार के द्वारा कुल 821.98 करोड़ खर्च किये जा रहे हैं जिसमें 793.65 करोड़ केन्द्र सरकार और 28.34 करोड़ राज्य सरकार द्वारा वहन किया जा रहा है।

ब्रु आदिवासी समुदाय

- ब्रु (रींग) पूर्वोत्तर भारत के एक जनजातीय समुदाय है।
- ये मिजोरम, त्रिपुरा और असम में बसे हुए हैं।
- त्रिपुरा में ब्रु समुदाय को विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह (PVTG) के रूप में वर्गीकृत किया गया है।

@resultmitra www.resultmitra.com

- त्रिपुरा और असम के अधिकांश ब्रु हिंदू हैं जबकि मिजोरम के ब्रु ने ईसाई धर्म अपना लिया।

- त्रिपुरा में रहने वाले अधिकांश ब्रु पिछले 2 दशकों से भौतिक विस्थापन का सामना कर रहे हैं।

- 1995 में मिजोरम में ब्रु को मतदाता सूची से हटाने की माँग के साथ तनाव हुआ।

- ब्रु समुदाय ने अलग से ब्रु स्वायत्त जिला परिषद (ADC) की माँग की।

Result Mitra

ब्रू जनजाति

ब्रू समझौते की मुख्य विशेषताएं:

पुनर्वास:

त्रिपुरा में ब्रू जनजाति के लिए 16 स्थायी पुनर्वास कॉलोनियों का निर्माण।

आर्थिक सहायता:

प्रत्येक परिवार को 1.5 लाख रुपये का एकमुश्त अनुदान, घर निर्माण के लिए 4 लाख रुपये, और मासिक 5,000 रुपये की सहायता दी गई।

सुविधाएं:

2 साल के लिए राशन की सुविधा।

सभी परिवारों को आधार कार्ड, वोटर आईडी, और अन्य सरकारी पहचान पत्र उपलब्ध कराए गए।

ब्रू जनजाति के सामने चुनौतियां:

1. आर्थिक पिछड़ापन
2. सांस्कृतिक पहचान का संकट:
3. स्थायी पुनर्वास में देरी

महत्व:

ब्रू जनजाति भारत की सांस्कृतिक विविधता का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। उनके पुनर्वास और सामाजिक उत्थान के लिए उठाए गए कदम उनके अधिकारों की रक्षा और उनकी पहचान को संरक्षित करने में मददगार हैं।

Result Mitra

हमारे यहाँ चलने वाली टेस्ट सीरीज की लिस्ट और 1 साल के लिए उनकी Fee निम्न प्रकार है.

UPSC- GS - 1399 ₹ = 25 TEST
UPPSC - GS- 1399 ₹ = 30 TEST
BPSC - 1399 ₹ = 30 TEST
JPSC - 1399 ₹ = 30 TEST
MPPSC - 1399 ₹ = 30 TEST
UKPSC - 1399 ₹ = 30 TEST
RPSC/RAS - 1399 ₹ = 30 TEST
CGPSC - GS- 1399 ₹ = 30 TEST

Result Mitra